झारखंड में महात्मा गांधी की सक्रियता का ऐतिहासिक अध्ययन (1917 ई. से 1940 ई. तक)

पीएच. डी. पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध–प्रबंध का सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखण्ड)

शोध निदेशक

डॉ. उमेश कुमार

सहायक प्राध्यापक

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद, (झारखण्ड)

शोधार्थी

जितेन्द्र कुमार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय

धनबाद, (झारखण्ड)

भूमिका (**Introduction**) :

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भारत की ऐसी अति विशिष्ट शख्सीयत हैं, जो तमाम मुल्कों की सीमाओं से ऊपर उठकर पूरे विश्व में दुनिया के नायक के रूप में चित्रित हैं। सिर्फ मूर्तियों के रूप में या संस्थानों के नामकरण के कारण विश्वव्यापी नहीं हैं। उनके विचारों, नेतृत्व व खूबियों का प्रचार–प्रसार दिनानुदिन दुनिया में बढ़ रहा। साल 2017 में चंपारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष पर विविध आयोजनों का क्रम चला। इस सत्याग्रह में गांधीजी और किसानों की जीत के बारे में सभी परिचित हैं। राष्ट्रपिता, राजकुमार शुक्ल व उनके अन्य सहयोगियों के आग्रह पर चंपारण आए। वह ट्रेन के तीसरे दर्जे से उतरे। मुजफ्फरपुर में उन्हें स्टेशन से लेने गए थे अपने विद्यार्थियों के साथ आचार्य कृपलानी। पहचान नहीं सके। अफ्रीका में ही दुनिया स्तर पर पहचान बना चुके गांधी रेल के तीसरे दर्जे से बिल्कुल किसान की तरह कपड़े पहने, मोटरी–गठरी लेकर उतरे। कृपलानीजी व उनके छात्र उच्च दर्जे में, अच्छे पहनावे में उन्हें ढूँढ़ रहे थे। गांधी कैसे असाधारण, महान थे, यह सब बताते हुए आचार्य कृपलानी ने यह प्रसंग लिखा है (कृपलानी, 1997, 72)।[1] चंपारण में गांधी ने किस तरह काम किया ? चंपारण में हुए सत्याग्रह के सौ बरस पूरे होने पर दुनिया ने पुनः उसे नए सिरे से स्मरण किया। मानव समाज और संसार के लिए चंपारण मॉडल यह बिल्कुल नया प्रयोग था। चंपारण का यह प्रयोग जब शुरू हुआ, अंग्रेजों ने गांधी को बातचीत के लिए न्योता (प्रसाद, 2017, 67)।[2]

उन दिनों बिहार की ग्रीष्मकालीन राजधानी राँची हुआ करती थी। गांधी को बार–बार बातचीत के लिए राँची आना–जाना पड़ा (प्रसाद, 2017, 101)।[3] अंग्रेजों से चंपारण भूमि सुधार आंदोलन से संबंधित महत्त्वपूर्ण बातचीत राँची में हुई। उन दिनों की गांधी की राँची यात्रा के बारे में लोगों को लगभग जानकारी नहीं है। उसके बाद भी उनका कई बार राँची आना हुआ। जमशेदपुर, धनबाद, झरिया, देवघर, हजारीबाग, डालटेनगंज, गिरिडीह, चाईबासा, चक्रधरपुर, गोमिया, बेरमो, मधुपुर आदि जगहों पर गए। भाषण दिया, सभाएं कीं (सिन्हा, 2019, 98)।[4] गांधीजी जिन जगहों पर जाते थे, प्रयास करते थे कि वहाँ की प्रमुख संस्थाओं में भी जाएँ, लोगों से मिलें। ऐसा कार्य उन्होंने खनिज से परिपूर्ण झारखंड में भी किया। यहाँ भी कई संस्थाओं का दौरा किया। ताज्जुब की बात यह है कि उन संस्थाओं के लोग भी नहीं जानते कि गांधीजी ने उनके संस्थान का दौरा किया था। तब हर जगह पत्रकार होते भी नहीं थे। तब अखबारों की संख्या भी कम होती थी। पटना या कोलकाता के अखबारों में जरूर कुछ जगह मिल जाती थी। ऐसे अखबारों में पटना से प्रकाशित सर्चलाइट और कोलकाता का अमृत बाजार पत्रिका अखबार प्रमुख भूमिका अदा करता था। गांधीजी बहुत ही सघन दौरा करते थे (दत्ता, 1960, 58)।[5] इसलिए अखबारों में अगर खबर छपती भी थी, तो उनके एक–दो कार्यक्रम की ही। ऐसी स्थिति में बाकी खबरों के बारे में जानकारी मिल नहीं पाती थी। वह जमाना अलग था। खास कर तसवीर के मामले में। गांधीजी के झारखंड दौरे की बहुत कम तसवीरें उपलब्ध हैं। हर जगह उन दिनों कैमरे की सुविधा नहीं थी। हाँ, गांधीजी के जमशेदपुर और रामगढ़ दौरे का ब्योरा उपलब्ध है। रांची से सटे रामगढ़ में कांग्रेस का कॉन्फ्रेंस भी हुआ था। इसलिए पूरे मीडिया की नजर वहां थी।

देश–दुनिया में गांधीजी पर इतनी बातें हो रही हैं, उनकी गतिविधियों से जुड़े छोटे–छोटे दस्तावेज भी बड़े रूप में, बड़े फलक पर सामने आ रहे हैं, पर गांधीजी के उन दिनों के दक्षिण बिहार (अब झारखंड) की यात्राओं का अध्याय अब तक छूटा–सा जा रहा या नहीं आ पा रहा, जबकि चंपारण आंदोलन को एक

आकार देने में दक्षिण बिहार, यानी अब का झारखंड एक अहम केंद्र की तरह था। ऐसे में, झारखंड में गांधीजी के संबंधों एवं गतिविधियों को केन्द्र में रखते हुए शोध की नितांत आवश्यकता है।

शोध समस्या का वृतांत (**Statement of the problem**):

- सन् 1869 ई. में जब महात्मा गांधी का जन्म हुआ, तब हिंदुस्तान में ब्रिटिश शासन की जड़ें मजबूत हो चुकी थीं। स्वतंत्रता का पहला संग्राम के नाम से जाने जाने वाले 1857 के आंदोलन की विफलता ने ब्रिटिश शासन की बुनियाद को और मजबूत कर दिया (झा एवं मारिया, 2019, 156)।[6] लोग अपनी इच्छा से पराधीनता स्वीकार करने लगे थे। लेकिन, बीसवीं शताब्दी में विभिन्न आंदोलनों के साथ–साथ गांधी के युग का सूत्रपात हुआ। एक ऐसे संघर्ष की शुरूआत हुई, जिसकी परिणति हिन्दुस्तान की आजादी और शेष विश्व को अहिंसा व सत्याग्रह का सूत्र मिलने के रूप में हुई। इसके नायक रहे महात्मा गांधी (सरकार, 2012, 117)।[7]

- स्वतंत्रता की लड़ाई में ताना भगत समुदाय के लोगों ने आगे बढ़कर भाग लिया। लेकिन, इसके बावजूद इतिहास के पन्नों में उन्हें वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसके वे हकदार हैं। साल 1914 ई. में ताना भगतों ने आंदोलन शुरू किया था। रांची के मुड़मा में ताना भगतों से बापू की भेंट हुई थी। इसके उपरांत उरांव जनजाति से संबंध रखने वाले ताना भगतों ने महात्मा गांधी के साथ कदम से कदम मिलाकर अंहिसात्मक आंदोलन की शुरूआत की थी। ताना भगत समुदाय के लोग लोहरदगा, गुमला, लातेहार जैसे क्षेत्रों में सुदुरवर्ती ग्रामीण इलाकों में रहते आए हैं। कुडू, किस्को, सेन्हा, लोहरदगा आदि प्रखंड में ताना भगत समुदाय के लोग रहते हैं। आज भी इनकी संस्कृति उरांव जनजाति के आस–पास घूमती आ रही है। मूल रूप से आदिवासी परंपरा को अपनाने वाले ताना भगत समुदाय के लोग गांधी के बताए मार्ग पर ही चलते आ रहे हैं। (दत्ता, 1974, 212)।[8]

- झारखंड के एक जिले देवघर में महात्मा गांधी पर हमला हुआ था। हालांकि, इस हमले में बापू बाल–बाल बच गए थे। यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना राष्ट्रीय स्तर पर काफी चर्चित हुई थी। चहुंओर, इसकी निंदा हुई थी। इसके बावजूद देवघर से गांधी जी का संबंध नहीं टूटा। उन्होंने देवघर में मद्यपान निषेध और छुआछूत के विरोध पर काम किया (सिन्हा, 2019, 113)।[9]

- महात्मा गांधी का संबंध कोयलांचल से काफी गहरा रहा। कोयला क्षेत्र में वे कई बार पधारे। खासकर, कांग्रेस के गया कॉन्फ्रेंस के आयोजन और सदाकत आश्रम के लिए आर्थिक सहयोग बापू को यहां से मिला। जनमानस के बीच राष्ट्रवाद के प्रसार में भी गांधी जी के झरिया दौरे की बड़ी भूमिका रही (मिश्र, 2017, 98)।[10]

- झारखंड की धरती पर अंतिम बार बापू सन् 1940 में आये। उन्होंने रामगढ़ के कांग्रेस के कॉन्फ्रेंस में भाग लिया था। इसमें देश के दिग्गज कांग्रेसी नेताओं का जमावड़ा लगा था। राष्ट्रपिता बापू,

देशरत्न राजेंद्र बाबू, डॉ. श्री कृष्ण सिंह, पंडित जे एल नेहरू, लौहपुरूष पटेल आदि मुख्य नेता अधिवेशन में शामिल हुए थे (वीरोत्तम, 2020, 199)।[11]

विषय–विवरण (**State-of-the-art**):

शोध कार्य के लिए विविध साहित्यों का अवलोकन किया गया, जिसमें इतिहासकारों के कार्यों की सहायता ली गई है। बापू की आत्मकथा **सत्य का प्रयोग** पुस्तक में उनके सरल और सहज विचार तथा उनके कृतित्व की जानकारी मिलती है। सरकार के प्रकाशन विभाग की ओर से प्रकाशित किए गए **संपूर्ण गांधी वांङ्मय के विभिन्न खंडों** में बापू द्वारा चलाये गये आंदोलनों एवं उनके विचारों के संबंध में जानकारी हासिल होती है। उनके विभिन्न आंदोलनात्मक प्रयोगों के पीछे की रणनीति एवं प्रेरणा के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। इतिहासकार व प्रसिद्ध लेखक डॉ. के. के. दत्ता ने अपनी पुस्तक **बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास** में बिहार में स्वधीनता आंदोलन में बापू की भूमिका और यहां राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रसार में गांधी के अवदानों की विशेष जानकारी मिलती है। प्रख्यात इतिहसकार सुमित सरकार की **आधुनिक भारत** नामक पुस्तक में उनके बिहार आगमन और उनके द्वारा चलाए गए आंदोलनों के बारे में इस पुस्तक से जानकारी हासिल होती है। आंदोलनों के प्रतिफल की बारीकी से चर्चा इस पुस्तक हुई है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा में बापू के विभिन्न आंदोलनों को लेकर क्या क्या रणनीति तैयार हुई, कैसे उसे कार्यान्वित किया गया, पूरी तफ्सील से जानकारी मिलती है।

चंपारण में महात्मा गांधी, जो डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की पुस्तक है, में गांधी जी की गतिविधियों, आंदोलनों एवं उसकी एक–एक कड़ी के बारे में पूर्ण एवं विशेष जानकारी प्राप्त होती है। बनखंडी मिश्र की पुस्तक **रामजश अगरवाला** में महात्मा गांधी के कोयलांचल के विभिन्न दौरों के संबंध में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त होती है। साथ ही, बापू कब–कब झारखंड आए, इसका भी संक्षिप्त विवरण मिलता है। डॉ. बालमुकुन्द वीरोत्तम ने अपनी पुस्तक **झारखंड–इतिहास एवं संस्कृति**– में गांधी जी के झारखंड से जुड़ाव एवं यहां के क्रियाकलापों के बारे में पता चलता है।

शोध समस्या का अन्वेषण (**Problem to be investigated**):

- महात्मा गांधी ने अपने जीवन के प्रारंभिक काल से ही मानव समाज, मानवता और राष्ट्र के प्रति देश से विदेश तक विभिन्न क्रिया–कलापों के माध्यम से न केवल सकारात्मकता का प्रसार किया, बल्कि सुधार आंदोलन भी। बापू के जीवन–गाथा के विशिष्ट पहलुओं को शोध के माध्यम से उजागर करना है।
- ताना भगत समुदाय के लोग महात्मा गांधी के बताए मार्ग पर ही चलते आ रहे हैं। इनके जीवन में खादी का विशेष रूप से महत्व है। खादी की टोपी, खादी का कुर्ता, खादी का थैला इनका पहनावा है। अशोक चक्र के बजाए चरखा वाले तिरंगा की ही यह पूजा करते आए हैं। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस जैसे अवसरों पर तिरंगा फहराने से पहले यह उसकी पूजा

करते हैं। ताना भगत समुदाय पर गांधी के विचारों की छाप के उल्लेखनीय बिंदुओं को शोध के माध्यम से दर्शाना है।

- गांधीजी ने देवघर में सुधार आंदोलन चलाए थे। उन्हें जानकारी थी कि आदिवासी बहुल इलाके में लोग शराब का बहुत सेवन करते हैं और इसका उनका व उनके परिवार पर बहुत बुरा असर पड़ता है। आदिवासियों में संताल की आबादी वहाँ सबसे ज्यादा थी और गांधीजी को पता था कि अगर ये संताल शराब छोड़कर चरखा चलाने में लग जाएँ तो न सिर्फ देश की सेवा होगी, उनका सामाजिक जीवन बेहतर होगा, बल्कि संतालों की आर्थिक स्थिति में तेजी से सुधार होगा। बापू के कार्यक्रमों का देवघरवासियों के जीवन पर पड़े महत्व को शोध के माध्यम से प्रदर्शित करना है।
- गांधी जी का जब भी झरिया दौरा हुआ, तब–तक कोई न कोई विशिष्ट उद्देश्य उसके मूल में रहता था। कोयलांचल में गांधीजी को मिली मदद और उनके द्वारा कोयला क्षेत्र के नागरिकों के लिए किए गए प्रयासों को शोध के माध्यम से उजागर करना है।
- सन् 1940 में, रामगढ़ में, संपन्न हुए कांग्रेस के अधिवेशन में कई ऐसी घटनाएं हुईं, जो पूर्व में कभी देखने को नहीं मिली। कठिनाइयों के बावजूद यह अधिवेशन सफलतापूर्वक संपन्न हो पाया। इस अधिवेशन के महत्व एवं इसमें बापू की भूमिका को उजागर करना शोध का उद्देश्य है।

<u>शोध का उद्देश्य (**Objective of the research**)</u>:

- गांधी का कृतित्व और उनका व्यक्तित्व खुद ही एक अथाह समंदर की तरह है, जिसमें जितनी डुबकी लगाई जाए, हर बार नए मोती मिलते हैं। गांधी की प्रारंभिक यात्रा और समाज व देश पर उसके प्रभाव से परिचित करना शोध का उद्देश्य है।
- ताना भगत समुदाय के लोगों ने बापू के अहिंसात्मक आंदोलन का पालन आजतक किया है। वह हिंसा से पूरी तरह दूर रहते हैं। घर में कृषि उपकरण पुरातन समय से चले आ रहे खेती के सामान आज भी नजर आते हैं। अमूमन हर ताना भगत के घर में एक चरखा जरूर होता है। ब्रिटिश शासन के खिलाफ बिगुल फूंकने वाले झारखंड के आदिवासी ताना भगत विश्व के एकलौते और अनोखे समुदाय के तौर पर जाने जाते हैं। हर घर में सालो भर हर दिन तिरंगे की पूजा और भारत माता की वंदना से ही इन आदिवासी ताना भगतों के दिनचर्या की शुरुआत होती है। ताना भगत और बापू के संबंधों और उसका देश के राष्ट्रीय आंदोलन पर असर से परिचित करना शोध का उद्देश्य है।
- महात्मा गांधी ने जब बाबानगरी यानी देवघर का दौरा किया था, तो उस समय एक ऐसी घटना घट गई थी, जिसकी राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हो गई थी, आलोचना हुई थी। यह घटना थी उनकी कार पर जसीडीह में हमला होने की। इससे पहले गांधीजी 1925 में देवघर का दौरा कर चुके थे और उस दौरे में जिस प्रकार उनका स्वागत हुआ था, उसकी उन्होंने तारीफ की थी। कई जगहों पर अपने भाषण और अनेक लेखों में देवघर दौरे का उल्लेख किया था। लेकिन, 1934 में जब दूसरी बार बापू बाबानगरी आए, तो जसीडीह में उनकी कार हमला कर दिया गया था। सौभाग्य से, इस हमले में राष्ट्रपिता को चोट नहीं आई थी। वे किसी तरह बच गए थे। गांधी जी का देवघर से क्या संपर्क और संबंध था, इससे परिचय कराना शोध का उद्देश्य है।

- झरिया कोयलांचन से महात्मा गांधी का गहरा संबंध रहा। यहां वे कई बार आए। गांधी जी को कोयला क्षेत्र से आर्थिक मदद भी मिली। यहां उन्होंने मजदूरों की चेतना को भी जागृत किया। कोयला नगरी से गांधी जी के जुड़ाव से परिचित कराना भी इस शोध का उद्देश्य है।
- सन 1940 में कांग्रेस का 53वां कॉन्फ्रेंस, 18 से 20 मार्च तक, रामगढ़ की धरती पर हुआ। अधिवेशन झंडा चौक के पास हुआ था। जहां अधिवेशन हुआ था, वह आज सैनिक छावनी के क्षेत्र में है। रामगढ़ और बरकाकाना मार्ग पर हरहरि नदी के तटों पर भी अधिवेशन को लेकर जगह–जगह कई तंबुओं को लगाया गया था। अधिवेशन में सहभागिता निभाने के लिए रांची से चुटूपालू घाटी के रास्ते गाड़ी से महात्मा गांधी रामगढ़ आए थे। गांधीजी के रामगढ़ दौरे और उसके प्रभाव से परिचित कराना भी शोध के उद्देश्यों में से एक है।

शोध–प्रश्न (**Research question**):

- मोहनदास महात्मा गांधी के रूप में कैसे परिवर्तित हुए ? समय–समय पर उनकी विभिन्न भूमिकाओ ने समाज और देश को कैसे प्रभावित किया ?
- बापू ने ताना भगत समुदाय को अपने आचार–विचार–व्यवहार से गहरे तौर पर किस तरह प्रभावित किया ? दोनों ने एक–दूसरे का सहयोग कैसे किया ?
- देवघर से महात्मा गांधी का क्या संबंध रहा ? उनपर हमला क्यों हुआ ? सामाजिक सुधार की दिशा में बापू ने बाबानगरी में क्या कदम उठाए थे ?
- कोयलांचल में महात्मा गांधी का दौरा कितनी बार हुआ ? किन वजहों से हुआ ? यहां बापू को क्या सहायता मिली ?
- सन् 1940 ई. में रामगढ़ में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में बापू की क्या भूमिका रही ? आखिर क्यों यह यात्रा राष्ट्रपिता की अंतिम झारखंड यात्रा रही ?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा (**Research design & methodology**):

महात्मा गांधी के झारखंड से संबंधों के इतिहास का विवेचनात्मक अध्ययन करने के लिए तुलनात्मक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक के साथ–साथ वर्णनात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध कार्य को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करने की योजना है।

भूमिका

पहला अध्यायः मोहनदास करमचंद गांधी का परिचय और प्रारंभिक जीवन–गाथा

दूसरा अध्यायः महात्मा गांधी का ताना भगतों से संबंध

तीसरा अध्यायः गांधीजी का देवघर व कोयलांचल से जुड़ाव

चौथा अध्यायः राष्ट्रपिता और कांग्रेस का रामगढ़ अधिवेशन

उपसंहार

ग्रंथ सूची

डाटा संग्रहण एवं विश्लेषण में उपकरणों का प्रयोग (Tools to be used in the collection of data and analysis) :

प्रस्तावित शोध–प्रबंध में मानचित्र, ग्लोब, चित्र व एटलस इत्यादि की सहायता से ऐतिहासिक घटनाओं की दूरी, दिशा, सीमाएं, स्थानीयकरण तथा प्राकृतिक स्थितियों का ज्ञान कराया जा सकेगा, जिससे कि वे संबंधित घटनाओं का कार्य–कारण संबंध स्थापित कर सकें। इन उपकरणों की सहायता से तथ्यों का स्थानीयकरण होता है और वे ऐतिहासिक बन जाते हैं।

प्रस्तावित शोध प्रबंध की सामग्री नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता, खुदाबख्श ऑरियेंटल लाइब्रेरी, पटना में, गोवा स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी, एंड्रयूज लाइब्रेरी, गुजरात, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ मुंबई में उपलब्ध है।

प्रस्तावित शोध कार्य के महत्व (Significance of proposed work):

प्रस्तावित शोध कार्य में महात्मा गांधी के झारखंड से सबंधों के बारे में विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाएगा। इसलिए इसका अकादमिक महत्व है। साथ ही, गांधी कब–कब झारखंड पधारे और किस–किस कारणों से उनका दौरा हुआ, इनपर भी शोध कार्य होगा। ऐसे में, उन स्थानों का भी विशिष्ट महत्व जान पड़ेगा। ताना भगत और बापू के संबंधों और उसके राष्ट्रीय आंदोलन पर पढ़े प्रभावों की विवेचना की जाएगी। अतः, इसका ऐतिहासिक महत्व है। देवघर, कोयलांचल, रांची आदि जगहों पर बापू के दौरे का सारगर्भित अध्ययन किया जाएगा। झारखंड के क्षेत्र विशेष पर अनुसंधान होने से इस तरह के शोध कार्य को आगे भी बढ़ावा मिलेगा।

शोध में गांधी जी की यात्राओं के सामाजिक प्रभाव का भी विश्लेषण किया जाएगा। अतः, इसका समाजशास्त्रीय महत्व भी है। साथ ही, यह शोध गांधी के कुछ अनछुए पहलुओं की भी पड़ताल करेगा। इसलिए समग्र गांधी साहित्य के लिए भी उपयोगी होगा।

समकालीन ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing knowledge):

हिन्दुस्तान की जंग–एक–आजादी में महात्मा गांधी एक अजीम शख्सियत हैं। आधी धोती पहनने वाला पोरबंदर का वह शख्स केवल गुजरात नहीं, केवल हिन्दुस्तान नहीं, केवल विश्व नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए गौरव का प्रतीक था। गांधी विश्व के युगमहापुरूषों में से थे। उन्हें किसी एक भौगोलिक परिधि के

सीमित दायरे में अथवा किसी जाति विशेष, सम्प्रदाय या परंपरा के अन्तर्गत रखे जाने का विचार भी लाना असंगत होगा। वे सम्पूर्ण मानव कल्याण के लिए जन्मे थे और सभी संकीर्णता और बंधनों से परे थे।

गांधी जी का खनिज प्रदेश झारखंड से जुड़ाव एक स्वर्णिम इतिहास का हिस्सा है। चम्पारण आंदोलन (1917 ई.) से लेकर रामगढ़ में हुए कांग्रेस के अधिवेशन (1940 ई.) तक 23 वर्षों के कालखंड में गांधी जी के चरण कुल 12 बार झारखंड की धरती पर पड़े। झारखंड में राष्ट्रपिता न केवल शहरों में, यहां तक कि गांवों–कस्बों में जा–जाकर आमजनों से और आदिवासियों से मिले। उनकी इन यात्राओं का झारखंड के लोगों, आदिवासियों, समाज एवं संस्कृति पर विशेष प्रभाव पड़ा। कुछ चीजें ऐसी भी रहीं, जो जीवन में पहली बार गांधी के साथ झारखंड की धरती पर घटी। कुल मिलाकर, झारखंड से बापू का संबंध सामान्य नहीं, बल्कि विशिष्ट रहा। लेकिन, इन संबंधों की गाथा को उतना प्रचार–प्रसार नहीं मिल पाया। कारण, इस क्षेत्र में शोध का सर्वथा अभाव रहा। ऐसे में, प्रस्ताावित शोध कार्य निश्चित तौर झारखंड की विशिष्टता बताने और गांधी के विचारों का खनिज प्रदेश पर प्रभाव पड़ने के विषय को और अधिक उद्भाषित करेगा।

भविष्य के कार्य (**Future work**):

प्रस्तावित शोध प्रबंध में शोध कार्य में भविष्य का कार्य होगा कि इसे पुस्तक का रूप दिया जा सकता है, ताकि इसका उपयोग अकादमिक रूप से हो सके। इतिहास की पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। महात्मा गांधी संबंधी किसी भी शोध–कार्य में भी यह लाभदायक होगा। साथ ही, बापू के बारे में किसी व्याख्यानमाला या अन्य कोई शोध कार्य में इसका उपयोग किया सकेगा। उक्त शोध कार्य पर सेमिनार का आयोजन कर बापू के विचारों के झारखंड में प्रसार एवं उनके कृतित्व को नए शोधार्थियों एवं इस क्षेत्र में कार्य करने वालों को समझाया जा सकेगा।

शोध–कार्य के जरिए खनिज–प्रदेश झारखंड के उन जगहों में शोध का विस्तार और किया जा सकेगा, जहां अभी उस स्तर पर शोध नहीं हो पाया है। महात्मा गांधी ने खनिज प्रदेश के जिन स्थानों में राष्ट्रवाद के प्रचार के लिए विशेष कार्य किया, उन्हें उभारा जाएगा। क्षेत्र विशेष के शोध को लेकर छात्रों की रूचि बढ़ेगी। ऐसे, शोध कार्यो को बढ़ावा मिलेगा। इतिहास में झारखंड प्रदेश की भूमिका को और अधिक रेखांकित करने का कार्य हो सकेगा। गांधी और खनिज प्रदेश के संबंधों को और अधिक विस्तृत ढंग से जानने को लेकर अनुसंधान कार्य किया जा सकेगा।

संबंधित संदर्भ–सूची (**Related references**):

1. कृपलानी, कृष्ण, *''गांधीः एक जीवनी,''* नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ संख्या– 72

2. प्रसाद, राजेन्द्र, *''चंपारण में महात्मा गांधी'',* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ संख्या– 67

3. प्रसाद, राजेंद्र, *आत्मकथा,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ–101

4. सिन्हा, अनुज कुमार, *''महात्मा गांधी की झारखंड यात्रा,''* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ–98

5. डॉ दत्ता, के. के, *''राइटिंग्स एंड स्पीचेज ऑफ महात्मा गांधी रिलेटिंग टू बिहार'',* (1917–1947), दी गवर्नमेंट ऑफ बिहार, पटना, 1960, पृष्ठ संख्या–58

6. झा, रामनारायण एवं शमीम मारिया, *''गांधी आज भी खरे'',* सदीनामा प्रकाशन, कोलकाता, 2019, पृष्ठ संख्या–156

7. सरकार, सुमित, *''आधुनिक भारत'',* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ संख्या– 117

8. डॉ. दत्ता, के, के, *''बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास,''* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1974, पृष्ठ संख्या–212

9. सिन्हा, अनुज कुमार, *''महात्मा गांधी की झारखंड यात्रा,''* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पृष्ठ संख्या–113

10. मिश्र, बनखंडी, *''भारतीय कोयला उद्योग के अग्रणी पुरूष–रामजश अगरवाला'',* धनाबद, प्रशान्त ऑफसेट, 2017, पृष्ठ संख्या–98

11. डॉ. वीरोत्तम, बालमुकुन्द, *''झारखंड–इतिहास एवं संस्कृति'',* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2020, पृष्ठ–199